ए तो गत संसार की, जो खैंचा खैंच करत।
आपन तो साथी धाम के, है हम में तो नूर मत।। ३३ ।।

यह खींचतान करने की आदत जीवसृष्टि की है। हम तो परमधाम के साथी हैं और हमारे पास तो जागृत बुद्धि है।

मोमिन बड़े आकल, कहे आखिर जमाने के।
इनकी समझ लेसी सबे, आसमान जिमी के जे।। ३४ ।।

कुरान में लिखा है कि आखिर जमाने के मोमिन बुद्धिमान होंगे। जिनके ज्ञान को संसार के जीव तथा आसमान के देवी-देवता सब ग्रहण करेंगे।

जो कोई निज धाम की, सो निकसो रोग पेहेचान।
जो सुरत पीछी खैंचहीं, सो जानो दुस्मन छल सैतान।। ३५ ।।

अब जो कोई परमधाम के सुन्दरसाथ हों वह इस खींचतान के रोग से दूर रहना। जो तुम्हारे ईमान को धनी के चरणों से गिराए उसे ही अपना दुश्मन समझना।

अब बोहोत कहूं मैं केता, करी है इसारत।
दिल आवे तो लीजो सलूक, सुख पाए कहे महामत।। ३६ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि अब इससे ज्यादा मैं क्या कहूं? इशारतों से सब बता दिया है। तुम्हारे दिल में बात अच्छी लगे तो मेरे कहने पर चलो। इससे मुझे भी सुख होगा।

॥ प्रकरण ॥ ९४ ॥ चौपाई ॥ १३७६ ॥

राग श्री

सोई सोहागिन धाम में, जो करसी इत रोसन।
तौल मोल दिल माफक, देसी सुख सबन।। १ ।।

वह ब्रह्मसृष्टि ही परमधाम में सोहागिनी कहलाएगी जो यहां दूसरे सुन्दरसाथ को श्री राजजी महाराज की वाणी का अपनी शक्ति के अनुसार जागनी कर सुख देगी।

साथ मांहें सैयां धाम की, ईमान वाली सिरदार।
सो धन धाम को तौलसी, करसी दृढ़ निरधार।। २ ।।

सुन्दरसाथ में ईमान वाले ही परमधाम की सिरदार (प्रमुख) ब्रह्मसृष्टियां हैं। वही परमधाम की न्यामत (तारतम ज्ञान) को संसार के ज्ञान से तोलेंगे और दृढ़ यकीन से ग्रहण करेंगे।

पेहेले तौलें बुध जागृत, पीछे तौलें धनी आवेस।
और तौलें इस्क तारतम, तब पलटे उपलो भेस।। ३ ।।

पहले जागृत बुद्धि को, फिर धनी के आवेश को, फिर इश्क और तारतम को जब ब्रह्मसृष्टियां यकीन से ग्रहण करती हैं तब उनकी जाहिरी रहनी बदल जाती है।

तब तौलासी वासना, और तौलासी हुकम।
सब बल तौलें बलवंतियां, और तौलें सरूप खसम।। ४ ।।

तब ब्रह्मसृष्टियों के महत्व को, हुकम के महत्व को और अपने धनी के महत्व को सब सुन्दरसाथ पहचानेगा।

Nijanand App

रोसन करसी आपे अपना, जो सैयां जमातदार।
ए कौल अव्वल जोस का, जो किया है करार।।५।।

जो जुत्थपलि ब्रह्मसृष्टियां होंगी वह अपनी रहनी से दुनियां में जाहिर हो जाएंगी। यही वायदे शुरू में हमने परमधाम में श्री राजजी के सामने (जागो और जगाओ के वायदे) किए थे।

जो सैयां हम धाम की, सो जानें सब को तौल।
स्याम स्यामा जी साथ को, सब सैयों पे मोल।।६।।

जो परमधाम की ब्रह्मसृष्टियां हैं वह श्री राजजी, श्यामाजी और सुन्दरसाथ की साहेबी को जानती हैं।

नूर रोसन बल धाम को, सो कोई न जाने हम बिन।
अंदर रोसनी सो जानहीं, जिन सिर धाम वतन।।७।।

हमारे बिना परमधाम की जागृत बुद्धि और तारतम के बल को कोई नहीं जानता। जिनके अन्दर परमधाम का ज्ञान है वही धाम (वतन) की साहेबी जानते हैं।

इस्क ईमान धनी धाम को, और जोस जाग्रत पेहेचान।
तौलें धनी धन धाम का, यों कहे कुरान निसान।।८।।

कुरान में स्पष्ट लिखा है कि श्री राजजी के इश्क और ईमान, जोश और जागृत बुद्धि की पहचान से ही अपने धनी और धाम की पहचान करेंगे।

साथ अंग सिरदार को, सिरदार धनी को अंग।
बीच सिरदार दोऊ अंग के, करे न रंग को भंग।।९।।

सुन्दरसाथ श्यामाजी के अंग हैं और श्यामाजी श्री राजजी के अंग हैं, इसलिए सुन्दरसाथ और श्री राजजी के बीच के आनन्द को श्यामा जी भंग नहीं करेंगे।

साथ धाम के सिरदार को, मोमिन मन नरम।
मिलावे और धनीय की, दोऊ इनके बीच सरम।।१०।।

सुन्दरसाथ के सिरदार श्यामा महारानी को अपने मोमिनों के लिए बहुत प्यार है। सुन्दरसाथ और धनी दोनों के लिए श्यामाजी के दिल में बहुत लिहाज है (शर्म है)।

इत परीछा प्रगट, उठावे अपना भार।
बोझ निबाहें साथ को, और बोझ मसनंद भरतार।।११।।

अब यह बात बिलकुल जाहिर है कि जो सतगुरु देवचन्द्रजी की गादी पर बैठे, एक तो धनी देवचन्द्रजी जैसा बनकर दिखावे, सब सुन्दरसाथ को माया से जगाकर परमधाम ले चलने की जिम्मेदारी निभावे और अक्षरातीत की गादी की साहेबी (महत्व) विशेषता दुनियां में जाहिर करे।

ए तो पातसाही दीन की, सो गरीबी से होए।
और स्वांत सबूरी बिना, कबहूं न पावे कोए।।१२।।

यह जिम्मेदारी तो दीन की है (धर्म की है)। वह गरीबी (नम्रता) से निभाई जा सकती है। शान्ति और सब्र के बिना किसी से भी दीन की जिम्मेदारी नहीं निभाई जा सकती है।

Nijanand App

ए लसकर सारा दिल का, सो दिलबरी सब चाहे।
दिल अपना दे उनका लीजिए, इन बिध चरनों पोहोंचाए।। १३ ।।

यह सारा सुन्दरसाथ श्री राजजी का दिल श्यामा महारानी के अंग हैं, इसलिए वह प्यार चाहते हैं, इसलिए अपना प्यार देकर उनको प्यार से जीतो। इस तरह से हम सब सुन्दरसाथ धनी के चरणों में पहुंच सकते हैं।

जो कोई उलटी करे, साथी साहेब की तरफ।
तो क्यों कहिए तिन को, सिरदार जो असरफ।। १४ ।।

जो सुन्दरसाथ धनी की राह से विमुख होते हैं। उन्हें जिम्मेदार सुन्दरसाथ नहीं समझना चाहिए।

कह्या कुराने बंद करसी, इन के जो उमराह।
आधीन होसी तिनके, जो होवेगा पातसाह।। १५ ।।

कुरान में लिखा है कि जो धर्म के बादशाह होंगे, अर्थात् गादीपति आचार्य महाराज होंगे, वह वाणी का प्रचार नहीं होने देंगे और सुन्दरसाथ ऐसे महाराजों के ही अधीन होंगे (गुलाम होंगे)।

लटी तिन से न होवहीं, जो कहे सिरदार।
सबों सिरदार एक होवहीं, मिने बारे हजार।। १६ ।।

जो ब्रह्मसृष्टि हैं, उनसे धर्म के विरुद्ध काम नहीं होगा क्योंकि बारह हजार ब्रह्मसृष्टियों की सिरदार एक श्री श्यामाजी हैं।

लिख्या है कुरान में, छिपी गिरो बातन।
सो छिपी बातून जानहीं, ए धाम सैयां लछन।। १७ ।।

कुरान में लिखा है कि ब्रह्मसृष्टियों के बातूनी भेद कुरान में छिपे हैं। जो उन छिपे भेदों को जानते हैं, वही परमधाम की ब्रह्मसृष्टियां हैं।

भी लिख्या कुरान में गिरो की, सोहोबत करसी जोए।
निज बुध जाग्रत लेय के, साहेब पेहेचाने सोए।। १८ ।।

कुरान में लिखा है कि जो ब्रह्मसृष्टियों की संगत करेगा वही जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से धनी को पहचान सकेगा।

फुरमान कहे गिरो साहेदी, देसी कारन पैगंमर।
सब केहेसी महंमद का देखिया, तब कुफर तोड़सी मुनकर।। १९ ।।

रसूल साहब ने इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी के आने की जो भविष्यवाणी कुरान में की है, उसकी गवाही ब्रह्मसृष्टियां देंगी। श्री प्राणनाथजी के बताए अनुसार परमधाम को हमने देखा है, लिया है, ऐसा कहने से बेईमान लोग अपने पापों को छोड़कर सीधे रास्ते पर आएंगे।

करे पाक जिमी आसमान को, ऐसी बुजरक गिरो सोए।
होसी रूजू माएने सब इनसे, इन जैसी दूजी न कोए।। २० ।।

इस तरह से ब्रह्मसृष्टियां जीवों और देवी-देवताओं को तारतम वाणी से निर्मल करेंगी। इनके माध्यम से ही वाणी के सारे भेद जाहिर होंगे, इसलिए इनके समान और कोई दूसरा नहीं है।

Nijanand App

गिरो माफक सिरदार चाहिए, जैसा कह्या रसूल।
खैंच लेवें दिल साथ को, सब पर होए सनकूल।। २१ ।।

रसूल साहब ने कुरान में कहा है कि ऐसी ब्रह्मसृष्टियों के वास्ते सिरदार भी उनके लिए ऐसा ही होना चाहिए जो सुन्दरसाथ के दिलों को प्रसन्न करके जीत ले।

ए मैं कही तुम समझने, ए है बड़ो विस्तार।
बोहोत कह्या मेरे धनी ने, तुम करोगे केता विचार।। २२ ।।

मैंने तो तुम्हारे समझाने के लिए संक्षेप में कहा है, पर इसका विस्तार बहुत भारी है। मेरे धनी ने तो बहुत कुछ कहा है। तुम कहां तक विचार करोगे?

ले साख धनी फुरमान की, महामत कहें पुकार।
समझ सको सो समझियो, या यार या सिरदार।। २३ ।।

इस प्रकार धनी श्री देवचन्द्रजी और कुरान की गवाही लेकर महामतिजी सुन्दरसाथ को पुकार कर कहते हैं कि हे साथजी! समझ सको, तो समझ लेना। चाहे वह ब्रह्मसृष्टि है या वह ईश्वरीसृष्टि है।

॥ प्रकरण ॥ ९५ ॥ चौपाई ॥ १३९९ ॥

राग श्री

तो भी घाव न लग्या रे कलेजे

ना लग्या रे कलेजे, जो एते देखे धनी गुन।
कोट ब्रह्मांड जाकी पलथें पैदा, सो चाहे हमारा दरसन।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि धनी की इतनी मेहरबानी देखकर भी कलेजे में चोट नहीं लगी। करोड़ों ब्रह्माण्ड जिसके एक पल में पैदा और फना होते हैं, वह भी हमारे दर्शन चाहता है।

अचरज एक साथ जी, सुनो कहूं अपनी बीतक।
धनिए मोको मेहेर कर, ले पोहोंचाई हक।। २ ।।

हे सुन्दरसाथजी! मैं अपनी आप बीती बताती हूं। मुझे इस बात की हैरानी है कि धनी ने मुझ पर मेहर करके मुझे प्राणनाथ बना दिया।

ईमान ल्याओ सो ल्याइयो, कहूं अनुभव की बात।
मोको मिले इन बिध सों, श्री धाम धनी साख्यात।। ३ ।।

मैं अपने अनुभव की बात बताती हूं जिसे मानना हो वह मान लेना। मुझे इस तरह से साक्षात् धाम-धनी मिले हैं।

पीछे ईमान सब ल्यावसी, ए जो चौदे तबक।
अव्वल आकीन ब्रह्मसृष्ट का, जिनमें ईमान इस्क।। ४ ।।

पीछे तो चौहद लोकों के जीव भी ईमान लाएंगे, परन्तु सबसे पहले ब्रह्मसृष्टि जिनके अन्दर ईमान और इश्क है, यकीन लाएंगे।

ए बात नीके विचारियों, ज्यों तुमें साख देवे आतम।
पीछे साख दुनी सब देयसी, ऐसा किया खसम।। ५ ।।

अब जिस तरह से तुम्हारी आत्मा गवाही दे उस तरह से विचार करना। धनी ने ऐसी मेहरबानी की है। बाद में तो सारी दुनियां मानेगी।

Nijanand App